# भारत की अंतरिक्ष संप्रभुता को सुदृढ़ करना

## *नवाचार और विकास को बढ़ावा*

**14 अगस्त, 2026**

## अंतरिक्ष नेतृत्व की दिशा में भारत की छलांग

भारत की अंतरिक्ष यात्रा बुनियादी क्षमताओं के निर्माण से लेकर उन्नत और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को प्रदान करने तक विकसित हुई है। पिछले एक दशक में, सुधारों ने इस क्षेत्र को निजी उद्यम, स्टार्टअप और वैश्विक साझेदारी के लिए खोल दिया है। भारत अब प्रक्षेपण प्रणाली, उपग्रहों, अंतरिक्ष अनुप्रयोगों और मानव अंतरिक्ष उड़ान में अपनी क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। भारत अपना 80वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, ऐसे में इसकी अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाएं अंतरिक्ष के भविष्य को आकार देने वाले एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर राष्ट्र को दर्शाती हैं।

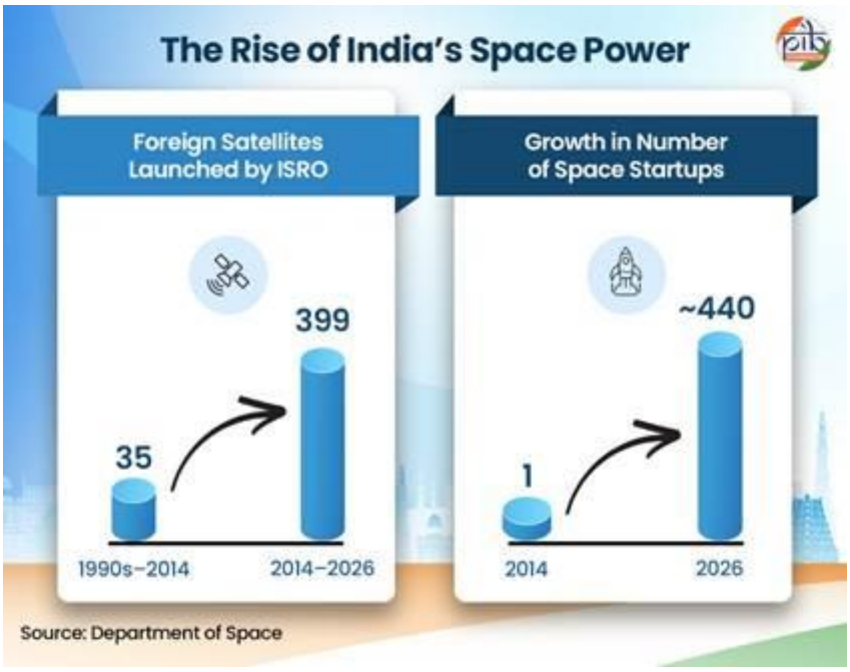

- भारत के अंतरिक्ष परितंत्र का तेजी से विस्तार हुआ है। 2014 में पंजीकृत अंतरिक्ष स्टार्ट-अप की संख्या सिर्फ एक थी जो बढ़कर 2026 में लगभग 440 (अगस्त तक) हो गई है।
- यह विस्तारित परितंत्र भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहा है, जिसका मूल्य अगस्त 2026 तक 9 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। अगले दशक में इसके 40-45 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।
- भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी निवेश लगभग छह गुना बढ़ गया, जो 2021-22 में 100.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 31 मार्च, 2026 तक 618.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। इसमें अकेले 2026 के दौरान 187 मिलियन अमेरिकी डॉलर दर्ज किए गए।
- 2026 के मध्य तक, 52 गैर-सरकारी संस्थाओं (एनजीई) को 113 प्राधिकरण प्रदान किए गए थे, जिनमें से 18 उपग्रह संचालन, पेलोड स्थापना और प्रक्षेपण सेवाओं के लिए स्टार्ट-अप हैं।

<u>पृथ्वी अवलोकन सार्वजनिक-निजी भागीदारी (ईओ-पीपीपी)</u>

ईओ-पीपीपी इन-स्पेस द्वारा शुरू किया गया एक अग्रणी सार्वजनिक-निजी ढांचा है। यह भारत के पहले निजी स्वामित्व वाले पृथ्वी अवलोकन उपग्रह नक्षत्र को विकसित करने के लिए सरकारी निगरानी और निजी उद्योग को जोड़ता है। इसमें निजी निवेश प्रतिबद्धताओं में लगभग 1,200 करोड़ रुपये का सहयोग है।

- भारत की बढ़ती प्रक्षेपण क्षमताएं वैश्विक मांग को आकर्षित कर रही हैं, विदेशी उपग्रह प्रक्षेपण 2014 से पहले 35 से बढ़कर जनवरी 2026 तक 399 हो गए हैं।
- भारत की वैश्विक साझेदारी 61 देशों और 5 बहुपक्षीय संगठनों में 300+ अंतरिक्ष सहयोग समझौतों के साथ अपने बढ़ते अंतरिक्ष नेतृत्व को मजबूत करती है, जिसमें अनुसंधान, प्रौद्योगिकी, संयुक्त मिशन और क्षमता निर्माण शामिल हैं।

## रणनीतिक कार्रवाई के माध्यम से सुधारों को तेज करना

भारत में अंतरिक्ष सुधारों से निजी भागीदारी, निवेश, नवाचार और प्रौद्योगिकी आधारित विकास के लिए एक सक्षम वातावरण तैयार हुआ है। इन उपायों ने पारंपरिक सरकार के नेतृत्व वाली अंतरिक्ष गतिविधियों से परे इस क्षेत्र को व्यापक बना दिया है।

- भारत ने 2020 में अपने अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी भागीदारी के लिए खोल दिया, जिससे उपग्रहों, प्रक्षेपण प्रणाली और अंतरिक्ष अनुप्रयोगों में उद्योग और स्टार्ट-अप को सक्षम बनाया गया। इससे एक व्यापक राष्ट्रीय अंतरिक्ष परितंत्र की ओर एक बड़ा बदलाव देखा गया।
- भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 ने अंतरिक्ष मूल्य श्रृंखला में निजी भागीदारी का और विस्तार किया है। इसने न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) और भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (इन-स्पेस) की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को भी परिभाषित किया।
- इसरो की वाणिज्यिक शाखा एनएसआईएल प्रक्षेपण, उपग्रह और अंतरिक्ष-आधारित सेवाएं प्रदान करती है और भारतीय उद्योग को इसरो प्रौद्योगिकी मुहैया कराती है। इसका राजस्व वित्त वर्ष 2021-22 में 321.77 करोड़ रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में 3,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के बढ़ते वाणिज्यीकरण को दर्शाता है।
- अब तक, एनएसआईएल ने इसरो/अंतरिक्ष विभाग में विकसित 83 प्रौद्योगिकियों को भारतीय उद्योग को हस्तांतरित करने के लिए 118 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।
- इन-स्पेस एकल-खिड़की तंत्र के माध्यम से निजी अंतरिक्ष गतिविधियों को सक्षम बनाता है। इसने 31 जनवरी 2026 तक उद्योग और स्टार्ट-अप को इसरो के 71 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सुविधा प्रदान की।
- फरवरी 2024 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नियमों को अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए उदार बनाया गया था। उपग्रह निर्माण और संचालन के लिए स्वचालित रूप से 74 प्रतिशत तक एफडीआई की अनुमति है, प्रक्षेपण वाहनों और स्पेसपोर्ट के लिए 49 प्रतिशत और उपग्रह तथा ग्राउंड-सेगमेंट घटकों के लिए 100 प्रतिशत की अनुमति है।
- मानदंड, दिशानिर्देश और प्रक्रियाएं (एनजीपी) 2024 ने पारदर्शी प्राधिकरण और अनुपालन आवश्यकताओं को स्थापित किया। यह ढांचा नियामक पूर्वानुमेयता और व्यापार में सुगमता को बढ़ाता है।
- लक्षित वित्तपोषण भारत के निजी अंतरिक्ष परितंत्र को मजबूत कर रहा है। इन-स्पेस सीड फंड योजना प्रारंभिक चरण के अंतरिक्ष स्टार्ट-अप का समर्थन करती है, 1,000 करोड़ रुपये का वेंचर कैपिटल फंड विकास पूंजी प्रदान करता है, और 500 करोड़ रुपये का प्रौद्योगिकी दत्तक कोष अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों की व्यापक तैनाती को सक्षम

बनाता है। इसके अलावा, सैटेलाइट बस एज ए सर्विस (एसबीएएएस) योजना को सैटेलाइट बस क्षमताओं के विकास का समर्थन करने के लिए 75 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

ये सुधार एक अधिक प्रतिस्पर्धी और गतिशील अंतरिक्ष परितंत्र का निर्माण कर रहे हैं। वे भारतीय उद्योग और स्टार्ट-अप को अंतरिक्ष मूल्य श्रृंखला में योगदान करने में सक्षम बना रहे हैं।

## पृथ्वी से परे पहुंचती देश की अंतरिक्ष क्षमता

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम उपग्रह विकास से लेकर चंद्रमा, मंगल और सौर मंडल में जटिल मिशनों तक आगे बढ़ा है। देश की अंतरिक्ष उपलब्धियां अन्वेषण, नेविगेशन, विज्ञान और उन्नत अंतरिक्ष संचालन में बढ़ती क्षमताओं को प्रदर्शित करती हैं।

### आत्मनिर्भर अंतरिक्ष परिवहन

- भारत ने चार स्वदेशी प्रक्षेपण यान ध्रुवीय उपग्रह प्रमोचक यान (पीएसएलवी), भू-समकालिक उपग्रह प्रमोचक यान (जीएसएलवी), भू-समकालिक उपग्रह प्रमोचक यान मार्क III (जीएसएलवी एमके III) और लघु उपग्रह प्रमोचक यान (एसएसएलवी) का प्रचालन किया है।

- ये प्रक्षेपण यान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए वाणिज्यिक प्रक्षेपणों के अलावा पृथ्वी अवलोकन, संचार, नेविगेशन, अंतरिक्ष विज्ञान और अन्वेषण में सहयोग करते हैं।
- पिछले तीन वर्षों (जुलाई 2023 से जून 2026) में, भारत ने 12 लॉन्च व्हीकल मिशन सफलतापूर्वक पूरे किए, जिसमें 11 राष्ट्रीय उपग्रह और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के लिए नौ उपग्रह शामिल हैं।

**भारत अपनी प्रक्षेपण क्षमता का विस्तार कर रहा है**

भारत बढ़ती राष्ट्रीय और वाणिज्यिक अंतरिक्ष मांग को पूरा करने के लिए अपने प्रक्षेपण बुनियादी ढांचे को मजबूत कर रहा है। श्रीहरिकोटा में वर्तमान में दो ऑपरेशनल लॉन्च पैड हैं, जिनमें से एक अत्याधुनिक लॉन्च वाहनों के लिए स्थापित किया जा रहा है। कुलशेखरपट्टिनम, तमिलनाडु लघु उपग्रह प्रक्षेपण वाहनों (एसएसएलवी) और निजी क्षेत्र के प्रक्षेपणों के लिए भारत के दूसरे रॉकेट प्रक्षेपण स्थल के रूप में भी उभर रहा है। साथ में, यह केंद्र प्रक्षेपण क्षमता, आवृत्ति और परिचालन सुदृढ़ता का विस्तार करेंगी। इससे प्रतिस्पर्धी वैश्विक अंतरिक्ष-प्रक्षेपण केंद्र के रूप में भारत की स्थिति मजबूत होगी।

**चंद्र अन्वेषण - चंद्रयान कार्यक्रम**

- चंद्रयान -1 (2008) भारत का पहला चंद्र मिशन था जिसने चंद्रमा की सतह पर पानी के अणुओं और हाइड्रॉक्सिल का पता लगाया। इसने भारत को वैश्विक चंद्र विज्ञान में एक योगदानकर्ता के रूप में स्थापित किया।
- चंद्रयान -2 (2019) 100 किमी की ऊंचाई से संचालित होता है और चंद्रमा की 30 सेमी रिज़ॉल्यूशन तक की छवियां बनाता है, जो चंद्र ऑर्बिटर प्लेटफॉर्म से अब तक की उच्चतम रिज़ॉल्यूशन ऑप्टिकल छवियां हैं।
- चंद्रयान-3 (2023) ने भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट-लैंड करने वाला पहला देश और चंद्रमा पर सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला चौथा देश बना दिया।

**भविष्य के चंद्र मिशन**

- चंद्रयान-4 में चंद्र नमूने संग्रह, चंद्रमा की सतह से चढ़ाई और पृथ्वी पर चंद्र से नमूने लेकर आने का प्रदर्शन किया जाएगा। मिशन के लिए नियोजित समयरेखा 2027 है।
- चंद्रयान-5/लुपेक्स इसरो-जाक्सा का संयुक्त मिशन है जो चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के पास चंद्रमा के पानी सहित चंद्र वाष्पशील तत्वों का अध्ययन करेगा।

## चंद्रमा से परे: मंगल, सूर्य और गहरा अंतरिक्ष

- मार्स ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान) को 24 सितंबर 2014 को मंगल ग्रह की कक्षा में डाला गया था, जिससे यह भारत का पहला अंतरग्रहीय मिशन बन गया। अंतरिक्ष यान ने 8 वर्षों से अधिक समय तक काम किया, जो अपने नियोजित छह महीने के मिशन से कहीं अधिक था।
- एस्ट्रोसैट, भारत का पहला समर्पित भारतीय खगोल विज्ञान मिशन है जिसका उद्देश्य एक्स-रे, ऑप्टिकल और यूवी स्पेक्ट्रल बैंड में आकाशीय स्रोतों का एक साथ अध्ययन करना है।

- आदित्य-एल1 (2023) सूर्य का अध्ययन करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष-आधारित मिशन है, जो सूर्य-पृथ्वी एल1 बिंदु पर पृथ्वी से लगभग 1.5 मिलियन किलोमीटर दूर स्थित है। 27 टीबी से अधिक सौर डेटा सार्वजनिक रूप से जारी किया गया है।
- जनवरी 2024 में लॉन्च किए गए एक्सपोसैट ने एक्स-रे ध्रुवीकरण खगोल विज्ञान में भारत की क्षमताओं का विस्तार किया। इसने चरम ब्रह्मांडीय स्रोतों के विस्तृत अध्ययन को संभव बनाया है।
- स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (स्पैडेक्स), जनवरी 2025 ने भारत को स्वायत्त अंतरिक्ष डॉकिंग और अनडॉकिंग का प्रदर्शन करने वाला चौथा राष्ट्र बना दिया।

**एक्सिओम-4: मानव अंतरिक्ष उड़ान क्षमताओं को आगे बढ़ाना**

- ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला, देश के पहले अंतरिक्ष यात्री जिन्होंने 25 जून 2025 को लॉन्च किए गए एक्सिओम-4 मिशन में आईएसएस की यात्रा की थी। उनकी भागीदारी ने भारत को मानव अंतरिक्ष यान और माइक्रोग्रैविटी अनुसंधान में मूल्यवान अनुभव प्रदान किया।
- एक्सिओम-4 का समापन 15 जुलाई 2025 को सफलतापूर्वक हुआ, जिससे गगनयान सहित भविष्य के चालक दल के मिशनों के लिए भारत के परिचालन अनुभव को मजबूती मिली।

**एनएवीआईसी (नाविक) - भारत की स्वदेशी नेविगेशन प्रणाली**

- भारतीय नक्षत्र (एनएवीआईसी) के साथ नेविगेशन पूरे भारत में और अपनी सीमा से 1,500 किमी तक स्थिति, नेविगेशन और समय प्रदान करता है। यह भारत की नेविगेशन स्वायत्तता को मजबूत करता है और सामरिक तथा नागरिक अनुप्रयोगों में सहयोग करता है।
- एनवीएस-01 और एनवीएस-02, दूसरी पीढ़ी के पहले दो एनएवीआईसी उपग्रह हैं, जो क्रमशः मई 2023 और जनवरी 2025 में प्रक्षेपित किए गए थे।
- एनवीएस-03 प्रक्षेपण के लिए तैयार है। जबकि एनवीएस-04 और एनवीएस-05 तैयारी के अपने उन्नत स्थिति में हैं। दूसरी पीढ़ी के उपग्रह सिस्टम की विश्वसनीयता और निरंतरता को बढ़ाएंगे।
- एनएवीआईसी को पावर-ग्रिड सिंक्रोनाइजेशन, रीयल-टाइम ट्रेन ट्रैकिंग, आधार जियो-टैगिंग और मोबाइल चिपसेट में एकीकृत किया जा रहा है।

- इसे अपनाने से महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और रोजमर्रा की सेवाओं में उपग्रह-आधारित स्थिति का विस्तार हो रहा है।

भारत की बढ़ती क्षमताएं अंतरिक्ष विज्ञान और अन्वेषण में नई सीमाएं खोल रही हैं। वे अंतरिक्ष में देश की तकनीकी क्षमताओं और वैश्विक स्थिति को भी मजबूत करते हैं।

## भारत की अंतरिक्ष यात्रा का भविष्य

भारत मानव अंतरिक्ष उड़ान, गहरे अंतरिक्ष अन्वेषण और उन्नत अंतरिक्ष बुनियादी ढांचे के एक नए चरण में प्रवेश कर रहा है। आगामी मिशन निरंतर मानव उपस्थिति और जटिल कक्षीय संचालन के लिए क्षमताओं का विकास करेंगे।

- गगनयान मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम को जनवरी 2019 में मंजूरी दी गई थी। इसके दायरे को सितंबर 2024 में 20,193 करोड़ रुपये के कुल परिव्यय में विस्तारित और संशोधित किया गया था। इसमें भारतीय अंतर स्टेशन (बीएएस-01) के लिए अग्रदूत उड़ानें सहित कुल 8 मिशन शामिल थे।
- इसका उद्देश्य तीन दिवसीय मिशन के लिए 3 भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों के दल को 400 किलोमीटर की कक्षा में लॉन्च करना है।
- व्योममित्र हाफ-ह्यूमनॉइड सहित विभिन्न प्रौद्योगिकियों को मान्य करने के लिए पहले मानव रहित प्रायोगिक मिशन को 2026 की चौथी तिमाही में लक्षित किया गया है। चालक दल के मिशन को 2027 तक लक्षित किया गया है।
- भारत का नियोजित पांच-मॉड्यूल अंतरिक्ष स्टेशन भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (बीएएस) है। इसका परिचालन करने का लक्ष्य 2035 तक रखा गया है, जिसमें बीएएस-01 को 2028 तक लॉन्च करने की योजना है। यह लंबी अवधि की मानव अंतरिक्ष उड़ान, माइक्रोग्रैविटी अनुसंधान और उन्नत अंतरिक्ष संचालन का समर्थन करेगा।
- स्पैडेक्स-2 और स्पैडेक्स -3: भविष्य के चंद्रयान-4, गगनयान और बीएएस मिशनों के लिए कक्षीय डॉकिंग प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के लिए मिशनों का अध्ययन किया जा रहा है। वे अंतरिक्ष यान डॉकिंग, नमूना स्थानांतरण, चालक दल हस्तांतरण और शक्ति, द्रव और प्रणोदक हस्तांतरण जैसी क्षमताओं को सक्षम करेंगे।
- वीनस ऑर्बिटर मिशन: मार्च 2028 में इसके प्रक्षेपण का लक्ष्य रखा गया है। यह मिशन शुक्र के भूविज्ञान, वायुमंडल और आयनमंडल का अध्ययन करेगा। यह उन्नत एरोब्रेकिंग और थर्मल-प्रबंधन प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करेगा।

## उन्नत प्रौद्योगिकियां भारत की अगली पीढ़ी की अंतरिक्ष क्षमताओं को आकार दे रही हैं

- इसरो 200 टन का थ्रस्ट सेमी-क्रायोजेनिक इंजन विकसित कर रहा है। यह अधिक शक्तिशाली प्रक्षेपण वाहनों और उच्च पेलोड क्षमता को सक्षम करेगा।
- लॉन्च व्हीकल मार्क-3 (एलवीएम3) के लिए एक सेमी-क्रायोजेनिक बूस्टर स्टेज विकसित किया जा रहा है। यह एलवीएम3 की पेलोड-वहन क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा।
- इसरो वर्टिकल टेक-ऑफ और वर्टिकल लैंडिंग (वीटीवीएल) तकनीक का उपयोग करके बूस्टर रिकवरी का प्रदर्शन कर रहा है। यह रॉकेट-चरण पुन: प्रयोज्यता को सक्षम करेगा और भविष्य की प्रक्षेपण लागत को कम करेगा।
- इसरो एलओएक्स-मीथेन प्रणोदन का उपयोग करके आंशिक रूप से पुन: प्रयोज्य अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यान (एनजीएलवी) का विकास कर रहा है। यह अधिक पेलोड क्षमता प्रदान करेगा और लगातार लागत प्रभावी लॉन्च का समर्थन करेगा।
- इसरो पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान (आरएलवी) कार्यक्रम के लिए एक पंखों वाले कक्षीय पुन: प्रवेश यान का विकास कर रहा है। यह पुन: प्रयोज्य अंतरिक्ष परिवहन के लिए कक्षीय पुन: प्रवेश और रनवे लैंडिंग का प्रदर्शन करेगा।
- इसरो एयर-ब्रीदिंग प्रोपल्शन और एक टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर व्हीकल विकसित कर रहा है। यह तकनीक अधिक कुशल वायुमंडलीय उड़ान और उन्नत पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण प्रणाली को सक्षम कर सकती है।

अगला चरण मानव अंतरिक्ष उड़ान, ग्रहों की खोज और उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की भूमिका को और बढ़ाएगा। ये प्रयास एक अग्रणी वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति बनने की भारत की महत्वाकांक्षा को पूरा करने में मदद करेंगे।

## संदर्भ


अंतरिक्ष विभाग

- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2288336&reg=3&lang=1
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2115229&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2220433&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2147287&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2291077&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2093369&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2294771&reg=1&lang=1
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2244978&reg=3&lang=1

- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2288300&reg=3&lang=1

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2296785&reg=48&lang=1

पीआईबी बैकग्राउंडर

- https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=158973&ModuleId=3&reg=3&lang=2

लोकसभा

- https://sansad.in/getFile/loksabhaquestions/annex/187/AU1853_XFgHK7.pdf?source=pqals

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

- https://www.isro.gov.in/Chandrayaan-1_science.html
- https://www.isro.gov.in/Chandrayaan_2.html
- https://www.isro.gov.in/CHANDRAAYAN.html
- https://www.isro.gov.in/UnionCabinetApprovesIndiasMission.html
- https://www.isro.gov.in/ISRO_JAXA_CH5_Technical_Interface_Meet.html
- https://www.isro.gov.in/MarsOrbiterMissionSpacecraft.html
- https://www.isro.gov.in/MOM_NationalMeet_2022SEP.html
- https://www.isro.gov.in/Aditya_L1.html
- https://www.isro.gov.in/AdityaL1_second_cycle_AO.html
- https://www.isro.gov.in/PSLV_C58_XPoSat_Mission.html
- https://www.isro.gov.in/SatelliteNavigationServices.html
- https://www.isro.gov.in/GSLV_F12_Landingpage.html
- https://www.isro.gov.in/UnionCabinetApprovesIndiasMission.html

उप राष्ट्रपति सचिवालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1951522&reg=48&lang=2

प्रधानमंत्री कार्यालय

- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2144844&reg=48&lang=2

Click here for the pdf file.

****

**पीके/केसी/एके/एनजे**

**(Release ID: 2299421)**